इस पहल को इंडिया फ़ाउंडेशन ऑफ दी आर्ट्स के प्रोजेक्ट 560 के तहत समर्थन मिला है।

बेवरू

जनवरी 2020
बैंगलोर
5 रूपए

प्यार, इज़्ज़त, संघर्ष

घरेलू मज़दूर, सेक्स वर्कर, सफाई कर्मचारी और कपड़ा फ़ैक्टरी की यूनियन और संगठन के सहयोग के साथ

VOL. 4

पहचान का डर

अक्टूबर 26, 2019 को बैंगलोर पुलिस ने 59 बांग्लादेशी को बस्ती से गिरफ्तार किया। इसमे से कई बच्चे और औरतें भी हैं। ये वो बांग्लादेशी मुसलमान हैं जो सदियों से बैंगलोर शहर में कचरा उठा कर उसे छाँटने का काम करते हैं, लोगों के घरों में सफाई का काम करते हैं, उनके बच्चों की देख-भाल करते हैं और शहर की सड़के साफ करते हैं। गिरफ्तार किए 59 बांग्लादेशी को एक ट्रेन में भरकर ले जाया गया और रात के अंधेरे में भारत-बांग्लादेश के बार्डर पर छोड़ दिया गया। इसमे से कुछ तो घर वापिस पहुंचे हैं, कुछ का अभी तक पता नहीं चला। इस असमंजस के बीच हमने उन लोगों से बात की जो बैंगलोर की बस्ती में अभी भी रह रहे हैं। अपनी पहचान के ऊपर उठे सवालों को लेकर उनके खुद के कई सवाल हैं।

“16 साल की थी जब यह शहर पहली बार देखा था। मजेस्टिक रेल्वे स्टेशन पर उतर कर ऑटो करके मेरा आदमी मुझे इस बस्ती में लाया था। मेरा आदमी यहाँ कूड़े की गाड़ी चलाने का काम करता है। अब तो बैंगलोर ही घर है। ये जो घर है मैंने ही बनाया है, 8 रूपय किलो की लकड़ी लायी थी और 10 रूपय किलो के हिसाब से ये टिन। खुद ही बनाया है सब। अब सब छोड़ कर जाना होगा, वो कहते हैं कि ये मेरा घर नहीं है।”

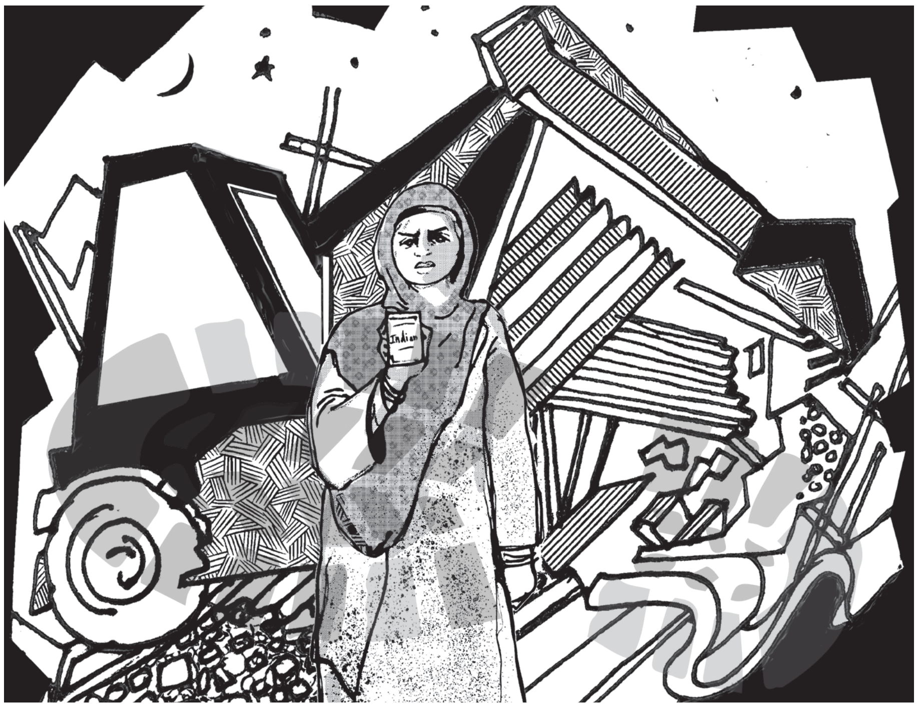

रेशमा बांग्लादेश से है, पीछेल दस साल से अपने परिवार के साथ बस्ती में रहती है और पड़ोस की ऊंची इमारतों के घरों में सफाई का और खाना बनाने का काम करती है।

8 साल हो गए ये सुनते-सुनते कि दो दिन में खोली खाली कर दो, तुम बाहर के लोग हो। पहले पुलिस बोलती थी, लेकिन इस बार सरकार बोल रही है। इसलिए लोगों में ज़्यादा डर है।

रेशमा का आदमी घरों और कमपनियों से कचरा इखट्ठा करके उसे छाँटने का काम करता है। उसका पूछना है कि अगर उसकी तरह के सब लोग शहर छोड़ कर चले गए तो फिर शहर की गंदगी कौन साफ करेगा? रेशमा झट से बोलती है, अब क्या मोदी कचरा उठाएगा।

दस साल पहले जब रेशमा भारत आई थी तो बार्डर पार करने के लिए उसने कुछ 7,000 रूपय दिये थे पर इस बार सुना है कि रात के अंधेरे में बार्डर पार करने के एक आदमी के 15 से 20 हज़ार तक लग रहे हैं। बस्ती में चारों तरफ एक सन्नाटा छाया है। कई खोली पर ताले लटके हैं।

... अगले पन्ने पर जारी है

संपादकीय

“ये हमारा देश है, अगर वो हमे यहाँ नहीं रहने देंगे तो हम कहाँ जाएंगे?”

18 जनवरी 2020 को मुन्नी बेगम की ज़िंदगी बदल गयी। जब वो काम से घर वापिस लौटी तो उसके और उसके साथ के लोगों के घरों का कोई निशान बाकी नहीं था। कुछ के घर तो 10 साल से भी ज़्यादा पुराने थे। घर की जगह अब वहाँ था कबाड़, कचरा और ईंट। पुलिस और बीबीएमपी के द्वारा लायी गयी जेसीबी वहीं खड़ी थी। बस्ती की बाकी औरतें और मुन्नी भाग कर जेसीबी के सामने खड़ी हो गई ताकि बचे-कुचे घर को टूटने से बचाया जा सके। उसका कहना है कि “4 लाख से भी ऊपर की संपत्ति और काम का नुकसान हुआ है। बिजली, पानी सब चला गया है। हमारे बच्चे अब इस मलबे के बीच सोएँगे। जानवर नहीं है हम, इंसान हैं। ऐसा कैसे कर सकते हैं वो हमारे साथ।”

“ये हमारा देश है। अगर वो हमे यहाँ नहीं रहने देंगे तो हम कहाँ जाएंगे?” एक युवा लड़के ने पूछा जो आसाम से है और इस इलाके में चार साल से रहता है।

बस्ती गिराने का आदेश एक विडियो के लाइव होने के बाद हुआ, जिसमे कहा था कि इस बस्ती में अवैध बांग्लादेशी अप्रवासी रहते हैं। असल में बस्ती में रहने वाले लोग उत्तर कर्नाटक, आसाम, झारखंड और बंगाल से हैं। वो घरों में सफाई का काम करते हैं, सेक्युर्टी का काम करते हैं, बिल्डिंग बनाने के लिए मज़दूर की तरह काम करते हैं और शहर का कूड़ा साफ करते हैं। उन्होने अपने सारे कागज़ दिखाये, पैन कार्ड, वोटर आई डी, घर के किराए के कागज़, विवादित एनआरसी के कागज़ भी दिखाये, जिसमे इलाके में रहने वाले आसाम के परिवारों के नाम साफ-साफ लिखे हैं। और कितने कागज़ दिखाने होंगे नागरिकता साबित करने के लिए? ऐसा लग रहा है कि सरकार राष्ट्रिय हित की सुरक्षा के लिए अपने ही लोगों के खिलाफ होती जा रही है। कानून के समर्थन के बिना नगर निगम के अधिकारी को किसी की निजी संपत्ति में ज़बरदस्ती घुसकर तोड़फोड़ करने का अधिकार नहीं है, खासकर के तब जब वहाँ के निवासी किसी और की ज़मीन पर घुसपैठ नहीं कर रहे हैं। उनके घर मिट्टी में मिल चुके हैं, नुकसान का सही हिसाब लगाना मुश्किल है। “इस मलबे के अंदर हमारे वो कागज़ गुम गए हैं जो हमारी नागरिकता को साबित कर सकते थे। अब हम पर कौन विश्वास करेगा कि हम इसी देश के नागरिक हैं?” अगर राष्ट्रियता को अलग भी रखें, काम करने वाले लोग जो घर बनाते हैं, सफाई करते हैं, उन्हे अपनी जगह से हटाना, यह दिखाता है कि सरकार किस तरह गरीब और गरीबी की उपेक्षा कर रही है। “मोदी ने कहा था की वो गरीबी हटा देगा। लगता है वो इसमे सफल हो रहा है क्योंकि देश का गरीब मर रहा है,” बस्ती के एक युवा ने कहा।

इस बस्ती में जो हुआ वो दिखाता है इस वक़्त देश के हालात। “अगर वो हमे देश के बाहर ही फेंकना चाहते हैं तो फिर एनआरसी की इतनी लंबी प्रक्रिया से हमे क्यों ही परेशान किया?” आसाम से आये हुए एक आदमी का पूछना है। अगर इसी तरह के कदम उठाए जाते रहे तो ज़ाहिर सी बात है कि लोगों में नफरत और भेद-भाव की भावना को बढ़ावा मिलेगा। ये अभी-भी देखा जा सकता है जिस तरह से सालों से देश में रह रहे बांग्लादेशी को अब सब शक की नज़र से देख रहे हैं। बांग्लादेशी मुसलमान की पहचान सिर्फ एक खतरा और डर तक सीमित हो गयी है। जिस मनमानी से वो बस्ती गिराई गयी और सरकार की कोई जवाबदेही नहीं थी, ये भविष्य के लिए एक चेतावनी है कि किस तरह सरकार नागरिकता, राष्ट्रियता और पहचान की नयी कल्पना और परिभाषा बना रही है।

*इस लेख के लिखे जाने के समय से, कार्यकर्ताओं ने एक स्टे ऑर्डर लिया है जिससे कि शहर में कोई और बस्ती इस तरह न तोड़ी जाए। बस्ती में रहने वाले लोग अभी भी अपने अधिकार के लिए लड़ते हुए वहीं रह रहे हैं। “हम यहाँ 10 साल से रह रहे हैं। ये हमारा भी घर है, हमारा भी शहर है।”

*ये लेख आधारित है फिल्म निर्माता और कार्यकर्तों के द्वारा मीडिया में आई जानकारी पर।

बेवरू समर्पित है बैंगलोर के मज़दूरों की आवाज़, नज़रिया और अनुभवों के लिए। ये अखबार खासकर असंगठित मज़दूरों के लिए है। अगर आप कविता, गाना या मज़दूरों के बारे में लिखना चाहते हैं तो हमारे साथ बाँटे। आपको ये अखबार कैसा लगा हमे ज़रूर बताइये। कोई सुझाव या सवाल है तो वो भी हमे बतायें। और जानकारी के लिए आप हमे लिख सकते हैं bevarupaseena@gmail.com या फोन कर सकते हैं- 63666646052

सभी लेख मरा टीम के द्वारा मज़दूरों के साथ चर्चा करके लिखे गए हैं।
मरा एक मीडिया और आर्ट्स कलेक्टिव है जो बैंगलोर में 2008 में शुरू हुआ। ये कलेक्टिव बोलने और अभिव्यक्ति की आज़ादी की ओर काम करता है जहां खासकर हाशिये की आवाज़ों को सामने रखने की कोशिश है। हम अलग-अलग तरह के संघर्ष और बाहर छूटे हुए लोग और उनके अनुभवों के बारे में बात करके एक विकासशील शहर की कल्पना को चुनौती देते हैं।

अंग्रेज़ी लेख: अंगारिका गुहा, अनुषी अग्रवाल, एकता एम, निखिला बी

हिन्दी अनुवाद: अनुषी अग्रवाल

कन्नड़ा अनुवाद: प्रतिभा आर,
महिमा गौड़ा, बसवाचार

लेआउट और चित्र: तारा एम थॉमस

...पिछले पन्ने से जारी है

पहचान का डर

जिन गलियों से पहले निकलना मुश्किल होता था, पानी या जगह को लेकर चीख-पुकार होती ही रहती थी, आज यह गलियाँ सुनसान पड़ी हैं। झगड़ा करने के लिए अब ज़्यादा लोग बचे नहीं हैं। कहते हैं यहाँ पहले 2,000-2,500 बांग्लादेशी परिवार रहते थे, अब तीन ही बचे हैं।

मीना का बस्ती छोड़ कर जाने का अभी मन नहीं है। वो इंतज़ार कर रही है कि शायद माहौल कुछ बहतर हो जाए और उसे कहीं ना जाना पड़े। उसे लगता है कि जब पुलिस इतने सालों से हमसे हफ्ता लेती है तो अब डर कर भागने की क्या ज़रूरत है। लेकिन इस बार पुलिस खोली के मालिक पर दबाव डाल रही है कि बांग्लादेशी को हटाओ जिसके चलते मीना के ज़्यादातर पड़ोसी अपनी खोली खाली करके, घर का सामान औने-पौने पैसों में बेच कर जा चुके हैं।

सभी के व्हाट्सप्प पर अलग-अलग खबरें आ रही है, गिरफ्तार किए लोगों को प्रताड़ित किया जा रहा है, बार्डर पर छोड़ रहे हैं, जेल में ड़ाल रहे हैं, बच्चे और माँ-बाप अलग हो गए हैं। इन सबके चलते लोगों में डर बैठ गया है और जैसे-तैसे लोग खुद ही बार्डर की तरफ निकल पड़े हैं। लेकिन बस्ती में खबर है कि बार्डर पर भी लोगों को भारत सरकार द्वारा पकड़ा जा रहा है। लोग एक अजीब मुसीबत में हैं, “जाने के लिए भी नहीं दे रहे, रहने के लिए भी नहीं दे रहे।”

एनआरसी क्या है? “मालूम नहीं”, “दो-तीन तारीख से ही ये सब सुना है”, “बाप-दादा के कागज़ात मांग रहे हैं।” कई सवाल हैं, डेटेनशन केंद्र बना है या नहीं? वहाँ कब तक रहेंगे? वो कैसे चलेगा? उसके बाद लोग कहाँ जाएंगे? सबकी आँखों में एक बेचैनी है, हम क्यों? अब क्यों? इतने सालों से यहाँ रहते हैं, काम करते हैं, लोगों के घर और सड़क साफ करते हैं, त्योहार यहाँ मनाते हैं, स्कूल की फीस, पानी का बिल, घर का किराया यहाँ जमा करते हैं। कोई चोरी नहीं करते, मेहनत की कमा कर खाते हैं, शहर को अपने काम से बहतर बनाते हैं, लेकिन फिर हमे यूं धक्का देकर क्यों भेजा जा रहा है?
कुछ लोग इस उम्मीद से गाँव वापिस जा रहे हैं कि मामला जब ठंडा होगा तो लौट आएंगे। “घर तो यहीं है और कहाँ जाएंगे हम? गाँव में कमाने का कोई ज़रिया नहीं। यहीं दुनिया बसायी है तो यहीं लौट कर आएंगे।”

बैंगलोर में घरों में काम करने वाली औरतें ज़्यादातर बाहर से हैं। कन्नड़ा बोलने वाली औरतें भी रायचूर, गुलबर्गा जैसे इलाकों से आई हैं। तो एक तरह से शहर में काम करने वाले सभी लोग बाहर से हैं। उन्होने एनआरसी के बारे में कभी नहीं सुना। उन्हे नहीं पता कि किसी को शहर से भगाया जा रहा है, या कोई बस्ती खाली करके जा रहा है। एनआरसी के बारे में सबको जानकारी नहीं है लेकिन इससे कुछ लोगों की ज़िंदगी पूरी तरह बदल गयी है। ऐसे में किसकी ज़िम्मेदारी बनती है कि सबको सरकार के नए कदमों के बारे में पता हो, एक मज़दूर को दूसरे मजदूरों के मुद्दों के बारे में पता हो?

रेशमा अभी इंतज़ार कर रही है कि शायद बात संभल जाये और उसे ये शहर छोड़कर ना जाना पड़े। उसने काम तो छोड़ ही दिया है इस डर से कि अगर पीछे से पुलिस आ गयी तो उसके बच्चों का क्या होगा। वहीं कुछ अपार्टमेंट में तो मालिक लोगों ने ही काम से निकाल दिया है कि अगर बांग्लादेशी है तो ये झंझट नहीं चाहिए, उन्होने बोला है कि अपनी पुलिस जांच करवा कर आओ, तभी काम पर रखेंगे। सबके पास आधार कार्ड है, पैन कार्ड है। किसी-किसी के पास तो वोटर id भी है लेकिन फिर भी लोग उनपर विश्वास नहीं कर रहे हैं। आधार कार्ड जिसे सरकार एक मात्र मूल पहचान पत्र बनाना चाहती है, जिससे वो सबके बैंक खाते और सभी तरह की जानकारी जोड़ना चाहती है, वो आज सबके पास है, चाहे वो इस देश का नागरिक हो या नहीं। “आधार कार्ड घर पर आ कर बनाते हैं, ऐसे ही तो बाहरवालों को नौकरी मितली है। यहीं के लोगों ने हमारा आधार कार्ड बनाया और अब वही इसकी मान्यता पर सवाल उठा रहे हैं।”

ज़्यादातर बांग्लादेशी मज़दूर बस्ती छोड़ कर जा चुके हैं जिसके चलते काम पर असर पड़ा है। जिन मालिकों ने इन्हे काम से निकाला था अब वही बस्ती में आकर मज़दूर ढूंढ रहे हैं, पर अब वहाँ कोई नहीं है। जो मज़दूर शहर छोड़ कर गए हैं उन्हे उम्मीद है कि अगले कुछ महीनो में शायद मामला ठंडा हो जाए और वो अपने काम पर, घर पर वापिस आ सके। लेकिन कुछ महीनो में एनआरसी और सीएए को लेकर क्या होगा और इन मज़दूरों की उम्मीद का क्या होगा, कहना मुश्किल है।

“अपने हाथों से यह घर बनाया था, मेहनत की कमाई से टीवी खरीद कर लायी थी। अगर ये शहर, ये घर छोड़ कर जाना पड़ा तो ये सब कुछ जला कर, तोड़ कर जाऊँगी, जिससे बाद में ये दुख ना हो कि मै पीछे कुछ छोड़ कर आई हूँ। सब कुछ खत्म करके जाऊँगी।”

18 जनवरी 2020 को बैंगलोर पुलिस और बीबीएमपी एक प्रवासी बस्ती में पहुंचे और मज़दूरों के घर गिराना शुरू किया इस दावे के साथ की बस्ती अवैध है और यहाँ कई अवैध बांग्लादेशी आप्रवासी रहते हैं। जो ज़िंदगी और घर बनाने के लिए लोगों ने अपना पूरा जीवन लगा दिया, उन घरों को कुछ ही मिनट मिट्टी में मिला दिया गया।

इस लेख में लोगों के नाम बदले गए हैं उनकी सुरक्षा के लिए और उनका नाम गुप्त रखने के लिए।

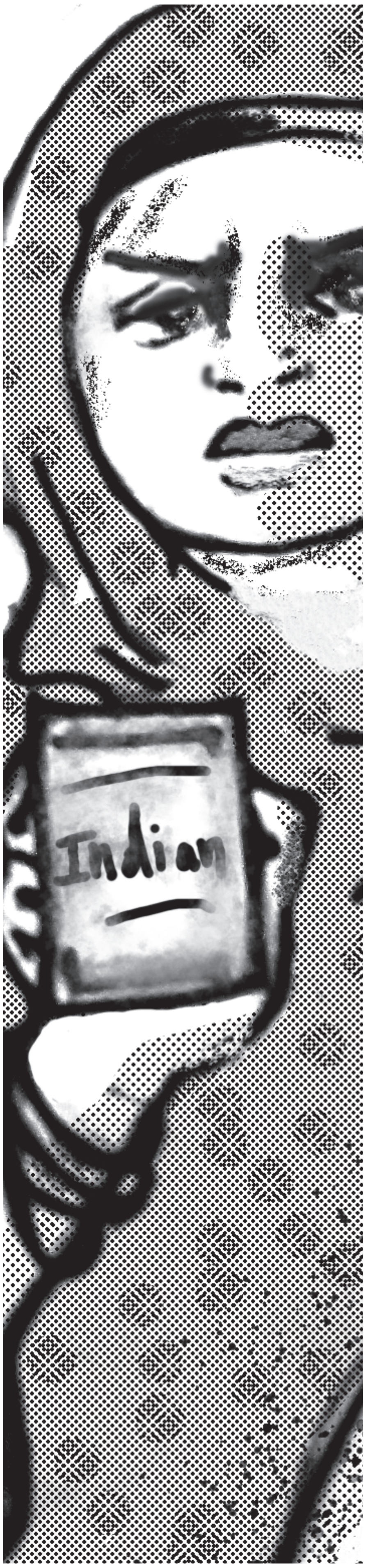

बिना सूईं की घड़ी

उसके हर खाली पल में एक बीड़ी बनती है

(ज़बीना ख़ानुम, नेरालु बीड़ी कार्मिकारा (आर) यूनियन, दावणगेरे, के सहयोग के साथ।)

आधा किलो तेंदू की पत्तियां रात भर में 1000 बीड़ी बन जाती हैं।
रात को सबके सोने के बाद, वो तेंदू की पत्तियों को पानी में भिगोकर रखती है।
वो सुबह 4 बजे उठती है। पानी भरती है, घर साफ करती है, खाना बनाती है, सबका खाने का डब्बा तैयार करती है,
बच्चों को स्कूल भेजती है।

उसके हर खाली पल में एक बीड़ी बनती है
9 बज चुके हैं। वो एक-एक करके तेंदू की पत्तियां सुखाती है।
अगर वो ज़्यादा गीली होंगी तो उसमे तंबाकू नहीं रुकेगा,
और अगर ज़्यादा सूखी होंगी तो वो फट जाएँगी।
एक-एक करके वो धीरे से तंबाकू भरती है और पत्ती को उसके चारों तरफ लपेट देती है।
वो उसे कसकर एक धागे से बाँधकर, बीड़ी का मुँह हल्का-सा अंदर की तरफ मोड़ देती है।
600 बीड़ी तैयार।

उसके हर खाली पल में एक बीड़ी बनती है
4 बज चुके हैं। बच्चे स्कूल से वापिस आ चुके हैं।
वो उसका ध्यान बाँट रहे हैं पर वो लगातार काम कर रही है।
एक भी पल गवाएं बिना वो ज़्यादा-से-ज़्यादा बीड़ी बना रही है।
उसे हर दिन 1,150 बीड़ी बनानी होती हैं। उसके हाथ और आँखें लगातार काम पर हैं।
दिन की 1000 बीड़ी बन चुकी हैं।

उसके हर खाली पल में एक बीड़ी बनती है
शाम तक वो कंपनी के मालिक से मिलती है।
वो दिन भर की बनी हुई बीड़ी की जाँच करता है।
रोज़ वो लगभग 200 बीड़ी हटा देता है - कोई बहुत ढ़ीली बंधी है,
कोई ज़्यादा कसकर बंधी है, कोई सूखी है, कोई गीली है।
800 से 900 बीड़ी के लिए मज़दूर को दिन के 120-130 रुपये मिलते हैं।
एक बीड़ी मज़दूर के लिए दैनिक न्यूनतम मजदूरी 210 रुपये प्रति दिन तय की गयी है।

उसके हर खाली पल में एक बीड़ी बनती है
ज़्यादातर बीड़ी मज़दूर औरतें हैं।
ज़्यादातर औरतें मुसलमान हैं।
दावणगेरे में ही 20,000-25,000 मुसलमान औरतें बीड़ी मज़दूर हैं।
उनके पास कोई सामाजिक सुरक्षा नहीं है, स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं हैं, छुट्टी, पेंशन या भविष्य निधि (PF) नहीं है।
स्थानीय श्रम विभाग या प्रशासन के पास उसकी कोई गिनती नहीं है। वो किसी को दिखाई नहीं देती।
उसका घर ही उसकी काम की जगह है। वो घर से बाहर नहीं निकलती। वो यूनियन से जुड़ी है।
वो बस चुप-चाप काम करती है।

उसके हर खाली पल में एक बीड़ी बनती है
वो हफ्ते के हर दिन काम करती है।
उसका पति हफ्ते के 3-4 दिन काम करता है।
अगर उसका दिन अच्छा है तो वो किसी ईमारत बनाने के काम पर, खेती के काम पर या कूड़ा साफ करने के काम पर दिन के 300-400 रुपये कमाता है।
परिवार औरत की कमाई पर ही निर्भर है क्योंकि भरोसा है कि वो हर रोज़ कुछ कमाएगी।
वो एक पल भी बर्बाद नहीं कर सकती।

उसके हर खाली पल में एक बीड़ी बनती है
बीड़ी को रखने और पैक करने का काम मालिक का है।
एक पैकेट में 25 बीड़ी, एक पैकेट का दाम 20 रुपये।
बीड़ी उद्योग राज्य में फल-फूल रहा है।
कहते हैं बीड़ी पीना सेहत के लिए हानिकारक है।
लेकिन मेहनत भरे दिन के बाद बीड़ी का एक ब्रेक लेना तो बनता है।

उसके हर खाली पल में एक बीड़ी बनती है

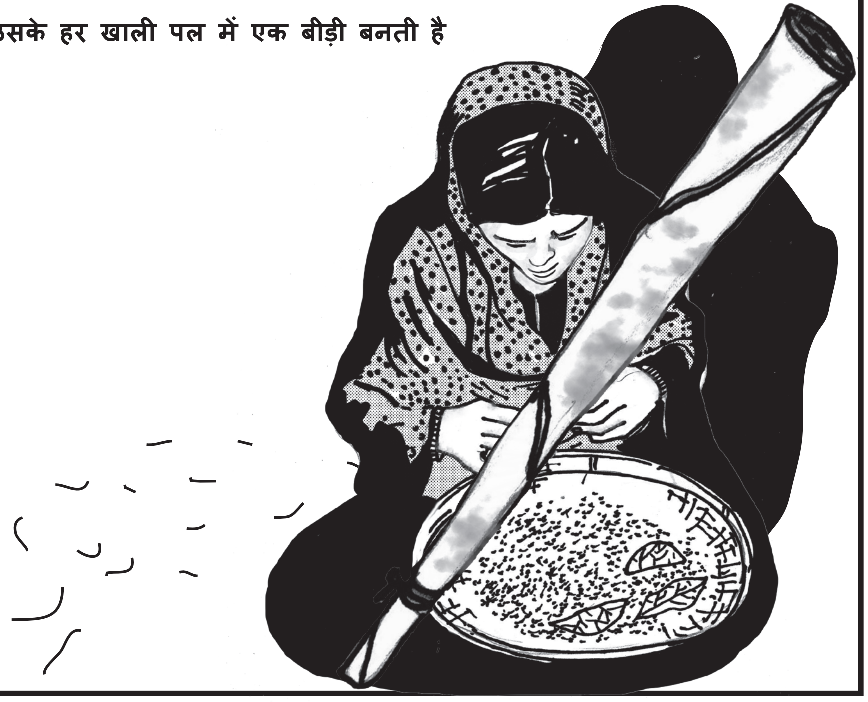

चिनमिनी क्रॉस

ये भाग समर्पित है मज़दूरों के लिए जहां वो खुलकर बात कर सकते हैं, बिना किसी डर के। ये भाग मज़दूरों की आशंका और उनकी आकांक्षाओं के बारे में है। चिनमिनी क्रॉस हर जगह है, हर गली, हर नुक्कड़ पर। ये ऐसी जगह है जहां हिंसा, लड़ना, झुझना, संघर्ष और सुंदरता साथ में रहते हैं।

बिना सूईं की घड़ी

ये भाग समर्पित है मज़दूरों की शहर में रोज़ाना की ज़िंदगी और उनकी दिनचर्या के लिए।

याद रहे

कार्यकर्म, विरोध, हड़ताल, ज़रूरी हस्तियाँ और बीते हुए कुछ पल जो हमे विश्वास है हमारे आज पर भी असर डालते हैं।

प्रवेश वर्जित है

एक कामयाब नौकरानी

बनने के मूल मंत्र

कौन-कौन सी भाषा बोलती हो तुम?
कन्नड़ा, हिन्दी, बंगाली, तेलुगू और तमिल।
इस इलाके में नयी हो क्या?
हाँ। पहली बार यहाँ काम कर रही हूँ।
चिंता मत करो, बस खेल के कुछ नियम सीख लो, सब ठीक होगा।

जब बिल्डिंग में जाओ तो याद से सिर्फ उल्टे हाथ वाली लिफ्ट ही इस्तेमाल करना। नौकरानी और कुत्तों के लिए वही वाली लिफ्ट है।

जब घर की घंटी बजाओ, तो थोड़ा मुस्कुराना।
पर ज़्यादा नहीं, वरना उन्हे लगेगा तुम कुछ ज़्यादा ही घुलने-मिलने वाली हो।
सीधे रसोई में जाना। अगर वो पूछे कि तुम महीने से हो क्या तो सीधे बोलना, नहीं।
कोने में तुम्हारा कप और प्लेट रखी होगी। अगर मालकिन का मूड अच्छा हुआ तो शायद पहले की पड़ी हुई थोड़ी सी चाय तुम्हें मिल जाए।
उनको कभी नहीं बताना कि तुम नॉन-वेज खाती हो।

हॉल एक सामान्य जगह है।
वहाँ थोड़ा समय लगा कर, आराम से सफाई करना वरना उसे लगेगा कि तुम महनत से काम नहीं करती।
कोई भी कीमती चीज़ को हाथ नहीं लगाना, वरना घूर-घूर कर तुम्हारी जान खा लेंगे।
और अगर कुछ भी टूटा तो तुम्हें ही उसका पैसा देना होगा।

बेडरूम सबसे खतरनाक जगह है। वो तभी साफ करना जब मालकिन कमरे में हो। तुम्हारी हर हरकत पर उसे नज़र रखने देना वरना तुम पर ही चोरी का इल्ज़ाम लगा देगी।

बेडरूम वो जगह भी हैं जहां मालिक तुम्हारे साथ कुछ भी कर सकता है।
ज़्यादातर छोटी बात-चीत से शुरू होता है, कुछ अजीब-सा बोल देगा, हल्के से छूते हुए निकल जाएगा, पर ये आगे कहीं भी जा सकता है।
याद रखना, कोई भी तुम्हारी कहानी पर विश्वास नहीं करेगा।
कुछ भी करना बस मालिक के साथ कमरे में अकेले कभी नहीं होना।
ज़्यादा सज-धज के मत जाना, साड़ी कमर पर ऊंची ही बाँधना, ज़्यादा सुंदर दिखने की ज़रूरत नहीं है।

पूजा के दिन।
उनके रीति-रिवाज़ के बीच मत आना।
उनके त्योहारों में ज़्यादा शामिल मत होना।
उनके भगवान के पास हमे जाना मना है। हम उनसे अलग हैं।

बच्चों के कमरे में भी बच्चों से ज़्यादा प्यार नहीं दिखाना।
उनके बच्चों के साथ मत खेलना, वरना वो तुम्हें ही शक की निगाह से देखेंगे।

काम खत्म होने के बाद वहाँ रुकना नहीं।
फौरन निकल जाना।

बिल्डिंग के पास जो पार्क है वहाँ चली जाना, पर बेंच पर मत बैठना, वो चौकीदार तुम्हें भगा देगा वरना।
सबके के लिए जहां कॉमन टॉयलेट बने हैं, उसके सामने कुर्सीयां पड़ी है, वहाँ बैठ सकती हो।

ख़्याल रखना उनके घर को हमेशा अपने घर जैसा साफ करना। उनके बच्चों का खयाल अपने बच्चों जैसे ही रखना, ऐसे खाना बनाना जैसे अपने परिवार के लिए खाना बना रही हो। पर एक पल के लिए भी कभी नहीं सोचना कि इसमे से कुछ भी तुम्हारा अपना है।

हमारा संघ

हम सड़क पर आये और अपनी
ज़िंदगी सड़क पर बनायी।
साथ लेकर आये कई सपने और
उम्मीद।
पुलिस और गुंडों की तानाशाही का
सामना करते रहे।
हम औरतें हैं; हम ज़िंदा हैं, हम
सक्षम हैं।
कई संघों के बीच, हमारा संघ
साधना महिला संघ।
सड़क की औरतों के बीच खड़ा हुआ
सिर्फ साधना महिला संघ।

- मंगला आर,
साधना महिला संघ

साधना महिला संघ पिछले 17 साल से उन महिलाओं के अधिकार के लिए काम करता है जो सड़क पर सेक्स वर्क करती हैं।

· ·

श्रद्धांजली

मरे हुए लोग मरते नहीं है।

वो तुम्हारा कूड़ा जला रही थी, उसकी साड़ी में आग लगी और उसकी मौत हो गयी।
वो तुम्हारे गंदे नाले का मुँह साफ कर रहा था, एक पाइप फटा और उसकी मौत हो गयी।
उसे अपनी पगार नहीं मिली, उसने फांसी लगाई और उसकी मौत हो गयी।
वो गंदी नाली साफ कर रहा था, उसने ज़हरीली गैस में सांस ली और उसकी मौत हो गयी।
याद रखो।
मरे हुए लोग मरते नहीं है।

जब मीडिया अनदेखा कर देती है,
और सरकार की कोई जवाबदेही नहीं होती,
जब उसके शरीर को घर वापिस भेजने के पैसे नहीं होते,
और आम लोगों को कोई फ़र्क ही नहीं पड़ता,
जब उसके परिवारवालों को कोई नौकरी नहीं मिलती,
और शहर बेख़बर चलता रहता है,
याद रखो।
मरे हुए लोग मरते नहीं है।

जब तुम अपना नया घर बनाते हो,
लापरवाही से अपना कूड़ा फेंक देते हो,
जब तुम विकास का चश्मा आँखों पर चढ़ाते हो,
और अपनी तरक्की के भाषण देते हो,
याद रखो।
मरे हुए लोग कभी मरते नहीं है।

और जब तुम अपनी दीवारें खड़ी करते हो,
और दरवाज़े पर ताले लगाते हो,
जब तुम कचरे को नज़रअंदाज़ करते हो,
और सरकार की बढ़ाई करते हो,
याद रखो।
मरे हुए लोग कभी मरते नहीं है।

ये श्रद्धांजली शहर में कूड़ा उठाने वाले, सफाई कर्मचारी और मैला ढ़ोने वाले मज़दूरों को समर्पित है जिनके पास कोई कागज़ नहीं है या उनका नाम किसी रिकॉर्ड में नहीं है। ये शहर गवाह है इस राज्य में आधे से ज़्यादा मैला ढ़ोने वालों की मौत का। इसकी आम वजह है काम की जगह पर बिना तैयारी या मदद के खतरे उठाना। हाल ही में पगार समय पर न मिलने की वजह से कुछ मज़दूरों ने अत्महत्या की। उनकी मौत के बारे में किसी ने बात नहीं की, चर्चा नहीं हुई, किसी ने माना तक नहीं कि शहर में ऐसा हुआ है, चाहे सरकार हो, मीडिया हो या आम जनता।

प्रोजेक्ट 560 आइ एफ ऐ के द्‌वारा एक पहल है कलाकार, संस्था और आम जनता को प्रोत्साहित करने के लिए कि वो शहर के साथ एक नयी कल्पना और सवालों के साथ काम कर सकें।